डाक पंजीयन संख्या - आर.जे./डब्ल्यू. आर./27/105/2006-2008
आर. एन. आई - राजहिन /2003/9899
मूल्य : पाँच रुपये

अजायब बानी

वर्ष - चार | **अंक** - चौथा | **मासिक पत्रिका** | **अगस्त** - 2006

3
मैंनू कृपाल मिलन दा चा वे
एक शब्द

5
परमात्मा हमसे दूर नहीं
बाबाजी द्वारा अभ्यास में बैठने से पहले प्रेमियों को हिदायतें

7
पवित्रता
परम सन्त अजायब सिंह जी द्वारा प्रेमियों के सवालों के जवाब

11
[स्वामी जी महाराज की बानी] तपिश 29 सितम्बर,1995 16 पी.एस.आश्रम
सतसंग-परम सन्त अजायब सिंह जी महाराज

27
परमात्मा एक रोशनी है
एक यादगार दास्तान

स्वत्वाधिकारी, प्रकाशक, मुद्रक व सम्पादक : प्रेम प्रकाश छाबड़ा ने प्रिन्ट टुडे श्री गंगानगर से छपवाकर; 1027 अग्रसेन नगर, श्री गंगानगर -335 001 से प्रकाशित किया। फोन 0154-246 4601
उप सम्पादक : नंदिनी। **विशेष सलाहकार** : गुरमेल सिंह नौरिया। **पृष्ठ साज सज्जा** : राजेश कुक्कड़
सहयोग : रेणु सचदेवा व सुखपाल कौर नौरिया।
सन्त बानी आश्रम 16 पी.एस. रायसिंहनगर - 335 039 जिला - श्री गंगानगर (राज.)
e-mail : dhanajaibs@yahoo.co.in **Website** : www.ajaibbani.org

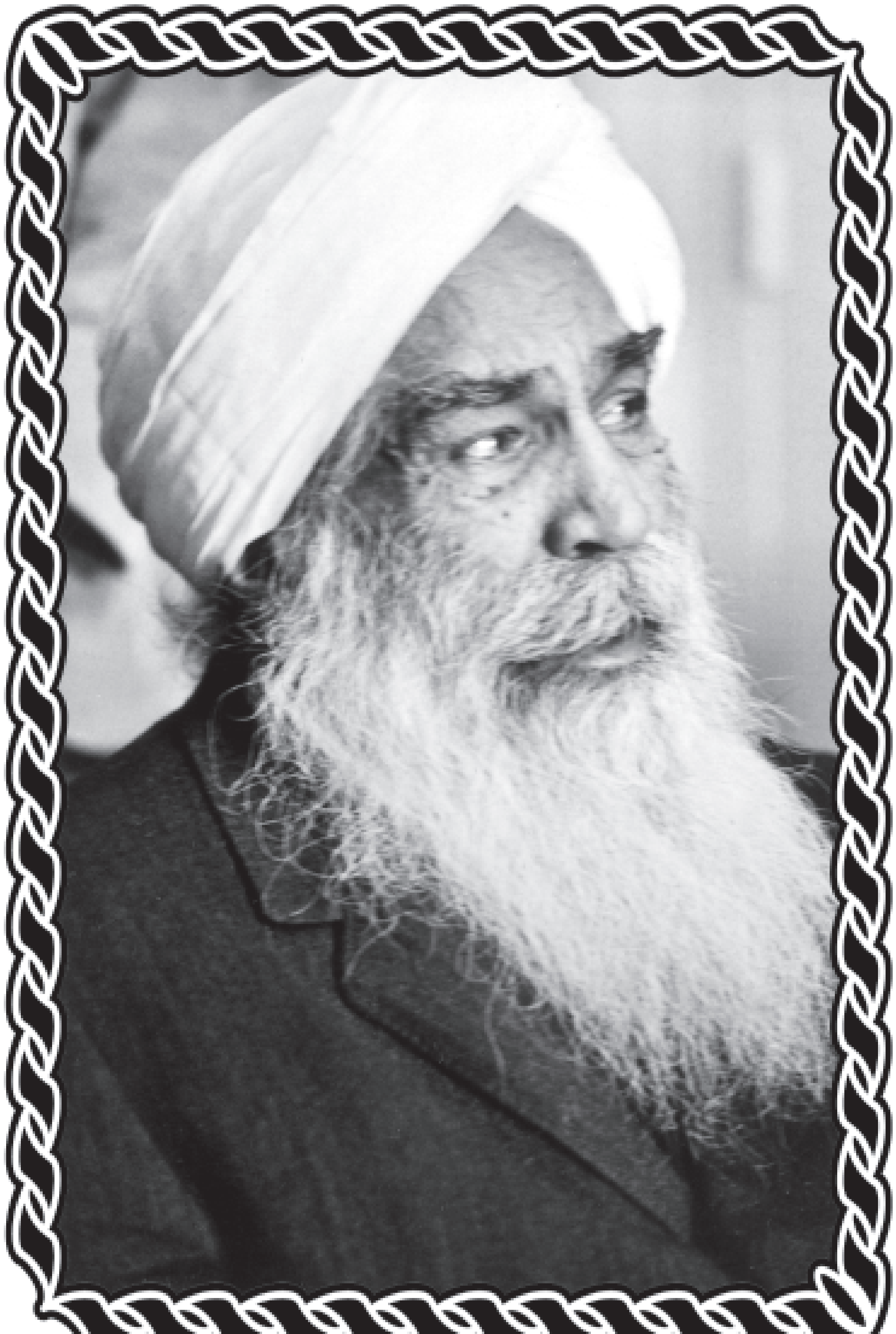

मैंनू कृपाल मिलन दा चा वे

मैंनू कृपाल मिलन दा चा वे, कर देयो पूरिया आसां,

1. *तेरियां उड़ीका विच, रोवां कुरलावां मैं,*
   मिल मेरे पिया, दिल दी तपत बुझावां मैं, (2)
   मेरा दुःख विछोड़े दा ठा वे,
   कर........

2. *याद तेरी आवे जदो, दिल नू सतांवदी,*
   सोणया दर्श बिना, चैन नही आंवदी, (2)
   तू, हैं शाहा दा शाह वे,
   कर........

3. *वासी सचखंड दा तूं, आया विच जग दे,*
   करदा संभाल बैठ, विच रग-रग दे, (2)
   बेटा, सावन देया दर्श दिखावे,
   कर........

4. *तेरे जेहा जग उते, दिसे ना कोई होर वे,*
   पावां तेरे तरले नां, मेरा कोई जोर वे, (2)
   मैंनू, नूरी दर्श दिखा वे,
   कर........

5. *शाह कृपाल तेरा यश जग गौंदा ऐ,*
   दास अजायब तेरा, नाम ध्यौंदा ऐ, (2)
   कृपाल, पिया ठंड कलेजे पा वे,
   कर.........

धन्य अजायब

⊂ सतसंगों के कार्यक्रम ⊂

अहमदाबाद

13 से 15 अगस्त – 2006

श्री लोहाना विद्यार्थी भवन

(व्यायाम विद्यालय के पीछे)

कांकरिया, अहमदाबाद (गुजरात)

16 पी.एस. आश्रम, राजस्थान

07	से	11	सितम्बर	–	2006
27	से	29	अक्टूबर	–	2006
24	से	26	नवम्बर	–	2006
29	से	31	दिसम्बर	–	2006

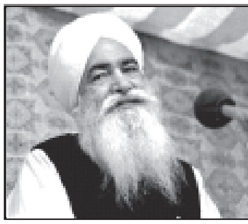

बाबाजी द्वारा अभ्यास में बैठने से पहले प्रेमियों को हिदायतें

परमात्मा हमसे दूर नहीं

25 नवम्बर, 1995 16 पी.एस.आश्रम

परम पिता परमात्मा सावन-कृपाल के चरणों में नमस्कार है, जिन्होंने हमारी गरीब आत्मा पर अपार दया करके हमें भक्ति करने का मौका दिया है। महाराज सावन सिंह जी कहा करते थे, ''जब तक हमारी आँखें बंद हैं हम तब तक ही कहते हैं कि हम सतसंग में जाते हैं। जब आँखें खुल जाती हैं फिर पता लगता है कि कोई हमें सतसंग में बुला रहा है; अपनी तरफ खींच रहा है।''

आप फिर कहते हैं, ''जब हम भजन करते हैं, अंदर जाकर उस सच्चाई को देखते हैं फिर पता लगता है कि पहले गुरु ही सेवक के अंदर प्यार का पौधा लगाता है। वह उस पौधे को पानी देकर हरा-भरा करता है। वही हमें अंदर से 'नाम' जपने की प्रेरणा देता है; **परमात्मा हमसे दूर नहीं**।'' गुरु नानकदेव जी कहते हैंः

आपे संगत सद बहाले आपे विदा करावे।

वह खुद ही संगत को बुलाता और विदा करता है। वह खुद ही बर्तन परोसता है, खुद ही खाता है; खुद ही आशीष देता है कि भंडारा भरपूर रहे लेकिन हम इस रचना को तभी देख सकते हैं जब परमात्मा हम पर दया-मेहर करता है। उसने हम पर अपार दया करके अपनी भक्ति का दान दिया है। यह उनकी दया है कि हम भजन-अभ्यास में बैठ रहे हैं। इन्सान की ताकत नहीं कि वह भक्ति कर सके।

आज इतने फैलाव का युग है कि जागते हुए तो हम दुनिया के काम करते ही हैं, सोए हुए भी दुनिया के कारोबार में लगे रहते हैं। हर इन्सान मारो-मार करता फिर रहा है। जो इस युग में भक्ति करते हैं उनके लिए गुरु नानक साहब इस तरह कहते हैंः

हौं बलिहारी ताकें जाऊँ, कलयुग में जिन पाया नाम।

आप कहते हैं, ''जिन्होंने कलयुग में 'नाम' और गुरु की शरण प्राप्त कर ली, मैं उन पर कुर्बान जाता हूँ।''

गुरु साहिबानों के जमाने में योगी लोगों का और कर्मकांड का बहुत जोर था। आज से लगभग 50-60 साल पहले मैंने खुद देखा है कि आमतौर पर साधु खेतों में तप किया करते थे, कुछ साधु उल्टे लटककर भी मालिक की साधना करते थे; पूर्ण गुरु न मिलने के कारण ही ऐसे लोग शरीर को कष्ट देते रहे। अभी भी आपको नाभा स्टेट में ऐसे साधुओं की निशानियाँ मिल जाएंगी।

महात्माओं ने हमें डराने के लिए बानियाँ नहीं लिखी। जिन महात्माओं की आँखें खुली हैं वे हमें चेतावनी देते हैं कि किस तरह जीव को यम-मार्ग से जाना पड़ता है। गुरु महाराज कहते हैं:

हर हर नाम जपेन्दियां, कछु न कहे यम काल।
नानक मन तन सुखी होय, अन्ते मिले गोपाल॥

यम से बचने का एक ही साधन 'नाम' है। 'नाम' प्रभु की ताकत है और कण-कण में व्यापक है। 'नाम' के आधार पर खंड-ब्रह्मांड चल रहे हैं। 'नाम' के साथ जुड़ने पर मन को और विषय-विकारों से जल रहे तन को भी शान्ति आ जाती है। **परमात्मा हमसे दूर नहीं**, वह हमारे अंदर ज्योत रूप नाद रूप में विराजमान है। जब हम अपने अंदर परमात्मा के लिए जगह बना लेते हैं तो वह हमें दर्शन जरूर देता है।

प्यारेयो ! हमें बहुत अच्छा समय मिला है। रोज की तरह आँखें बंद करके अपना सिमरन शुरू करें। जिन प्रेमियों को 'नाम' नहीं मिला वे भी इधर-उधर न घूमें। आँखें बंद करके दोनों आँखों के बीच तीसरे तिल पर अपने ध्यान को एकाग्र करें, सतगुरु-सतगुरु कहने में ही उनका फायदा है। आँखें बंद करके सिमरन करें।

h c h

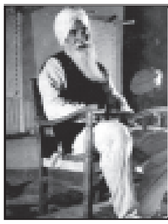

परम सन्त अजायब सिंह जी द्वारा प्रेमियों के सवालों के जवाब

पवित्रता

एक प्रेमी :- सन्तमत में **पवित्रता** का क्या सिद्धान्त है? हम किस तरह से दुनियादारी के सूक्ष्म असर को बेअसर कर सकते हैं? शरीर पवित्र रखने के लिए आप हमें क्या हिदायत देंगे?

बाबा जी :- सतसंगों में **पवित्रता** के बारे में बहुत कुछ बताया जाता है। मुझे अफसोस है कि आप लोग सन्तबानी मैगज़ीन मँगवाते तो हैं लेकिन पढ़ते नहीं। सन्तबानी मैगज़ीन में इस बारे में बहुत से सवाल जवाब छप चुके हैं, अगर पढ़ें तो आपको काफी मदद मिल सकती है। गुरु नानकदेव जी कहते हैं:

सच्चो ओरे सबको ऊपर सच विचार।

महाराज कृपाल कहा करते थे, ''सच सबसे ऊँचा है। लेकिन सच्चा-सुच्चा जीवन इससे भी ऊँचा है।'' मैं फिर भी आपको समझाने की कोशिश करता हूँ। हम दिन-रात ख्यालों में घूमते रहते हैं। बैठे-बैठे कभी किसी के प्रति नफरत करते हैं; चाहे उससे हजारों मील दूर हैं। कभी किसी के प्रति प्यार करते हैं; फिर और दौर चल पड़ता है। इसी तरह कभी बैठे-बैठे विषय भोगते हैं; कभी किसी को मारते हैं। यही अपवित्र ख्याल हैं।

महाराज कृपाल कहा करते थे, ''आमतौर पर अच्छी आत्माओं को हिन्दुस्तान में ही जन्म दिया जाता था, क्योंकि यहाँ मीट शराब का बोलबाला नहीं था। इस देश में ऋषियों-मुनियों के अवतार हुए हैं, इसे ऋषियों-मुनियों का देश कहा जाता है।''

आमतौर पर उस समय के लोग चाहते थे कि जिंदगी को **पवित्र** बनाना है। विषय-विकारों से बचना है। थोड़े से धन पर ही सब्र करना है। शादी के बाद पतिव्रता धर्म में रहना है।

आज ऐसे लोगों की कमी हो गई है। अब हिन्दुस्तान में भी पश्चिम के रीति-रिवाज चल रहे हैं। मीट-शराब का बोलबाला हो रहा है। कमाई वाले और **पवित्र** जीवन वाले लोग बहुत कम मिलते हैं। आज ऐसे-ऐसे सुंदर आश्रम बन गए हैं कि वहाँ जाने वाले प्रेमियों को हर तरह की सुविधाएं मिलती हैं। आप सोच सकते हैं जहाँ ऐसी सुविधाएं हों, अच्छे से अच्छे खाने मिलते हों वहाँ कौन भजन करता है?

जब मैंने जलधारे किए, धूणे तपाए तब मुझे ऐसे साधुओं से मिलने का मौका मिला जो दिन-रात मन-इन्द्रियों के साथ संघर्ष करते थे। वे ज्यादा खाना नहीं खाते थे, रातों को जागते थे। कबीर साहब ने कहा है:

सुखिया सब संसार है, खाए और सोए।
दुखिया दास कबीर है, जागे और रोए॥

एक बार वैंकुवर में पप्पू की तबीयत खराब होने की वजह से शर्मा इंटरव्यू करवा रहा था। वहाँ एक ऐसा प्रेमी आया जो हिन्दुस्तान के अच्छे-अच्छे आश्रमों में रह चुका था। उसकी बातचीत हमारे किसी सतसंगी के साथ हुई तो उसे जानकारी मिली कि हमारे आश्रम में सुबह तीन बजे से दिन शुरू होता है और शाम होते ही सो सकते हैं। भजन-सिमरन के अलावा और कोई कार्यक्रम नहीं होता।

यह जानकर उसके दिल में प्यार उठा उसने मुझसे पूछा कि क्या मैं आपके आश्रम में भजन-अभ्यास के लिए आ सकता हूँ? मैंने उससे कहा, ''प्यारेया ! मैं जानता हूँ कि तू अच्छे-अच्छे आश्रमों में रह चुका है, वहाँ अच्छे-अच्छे आदमियों ने तेरा इंतजाम किया है अगर तू भूख-प्यास काट सकता है तो बड़े शौंक से वहाँ आ सकता है। यह सुनकर वह खामोश हो गया।''

सन् 1978 में एक सेठ साहब बहुत मुश्किल से 77 आर.बी. वाले आश्रम में आए। वह आश्रम भी इस आश्रम की तरह जंगल में था। मैंने उससे कहा, ''आपको यहाँ पहुँचने में बहुत तकलीफ उठानी पड़ी, मुझे

माफ करें।'' उस सेठ ने कहा, ''मैं आपको माफ नहीं करता। मैं आपको तभी माफ करूँगा जब आप अपना आश्रम चाहे हजार मील दूर बनाएं ! लेकिन बनाएं सड़क पर। जितना भी पैसा लगेगा मैं लगाने के लिए तैयार हूँ।'' मैंने उससे कहा, ''यह मेरे बस में नहीं।''

प्यारेयो ! आपके कर्म अच्छे हैं। आप बार-बार यहाँ आ जाते हैं। इस धरती की मिट्टी आपको प्यारी लगती है। हिन्दुस्तान के आदमी दोबारा यहाँ आकर खुश नहीं होते; वे कहते हैं कि वहाँ तो कोई सुविधा ही नहीं, जंगल में बैठे हैं।

अगर आप **पवित्रता** रखें, आपकी सेहत और आपके ख्यालों पर अच्छा असर पड़ेगा। आप भजन-सिमरन में जल्दी कामयाब होंगे।

एक प्रेमी :- सन्त जी ! आप सेवक की करनी और गुरु की दया के बारे में कुछ बताएं। महाराज कृपाल कहा करते थे कि हमें *'निष्काम करनी'* करनी चाहिए?

बाबा जी :- करनी और दया दोनों ही साथ-साथ चलती हैं अगर गुरु दया करे और हम करनी न करें तो हम कामयाब नहीं हो सकते। सन्त-सतगुरु दया का रूप होते हैं। वे भूले-भटके सेवकों पर सदा ही दया करते हैं। गुरु नानकदेव जी कहते हैं:

साहिब गँवाया लोड़िए, नफर वगाड़े नित।

सन्त-सतगुरु बिगड़ी सँवारकर खुश होते हैं। वे इस बात का फक्र महसूस करते हैं कि इस सेवक के ख्याल बिगड़ गए थे, अब ठीक हैं। लेकिन सेवक ख्याल बिगाड़कर ही खुश होता है। हम अपने अंदर झाँककर देख सकते हैं कि हम मन का हुक्म मानते हैं। हमारा मन जो चाहता है हमसे करवा लेता है।

मैं महाराज सावन के समय में देखता रहा हूँ कि जीव अनेकों गुनाह करके खड़े होकर कह देते, ''मैंने बहुत गुनाह किए हैं माफी चाहता हूँ।'' महाराज सावन सिंह जी ने कभी नहीं पूछा कि क्या गुनाह

किए हैं? ऐसा ही मैंने परम पिता कृपाल के समय में भी देखा। मेरे साथ भी ऐसा ही होता है। सेवक अपने बहुत से ऐब बताता है कि मैं ये सब करता हूँ लेकिन मैं सेवक को प्यार से कहता हूँ, ''तू सिमरन कर अभ्यास कर, मेरी हमदर्दी तेरे साथ है। तू उठ ! तेरी पीठ पर तेरे गुरु का हाथ है।''

प्यारेयो ! यहाँ आने से पहले आपको संदेश दिया गया था कि आप अपनी तैयारी करके आएं अगर आप तैयार होकर आएंगे तो उसमें वस्तु डालनी बहुत आसान हो जाएगी। जो तैयार होकर आते हैं वे मुझे इंटरव्यू में अपने अच्छे अनुभव बताते हैं, मुझे खुशी होती है।

ऐसे भी प्रेमी आ जाते हैं जो चुटकियाँ बजाते हैं; खाली ही चले जाते हैं। ऐसे भी प्रेमी आते हैं जो कहते हैं कि साल भर के लिए वस्तु लेने आए हैं। कई प्रेमी ऐसा भी कहते हैं कि छह महीने के लिए वस्तु लेने आए हैं। ये गुलाम मन की माँगे हैं। जब देने वाला हमें जिंदगी की रोटी देने के लिए तैयार है तो हम भूल क्यों करते हैं?

आमतौर पर जब हम भजन में बैठते हैं, दुनिया की ख्वाहिशों के बारे में सोचना शुरू कर देते हैं। कोई बच्चा माँगता है ! कोई पत्नी माँगता है ! कोई धन माँगता है! कोई पत्नी कहती है कि पति के ख्याल अच्छे हो जाएं ! कोई कहता है कि मेरी बीमारी दूर हो जाए ! हमारा मन दफ्तर खोलकर बैठ जाता है, प्लानिंगें चलती रहती हैं। एक घंटे का तो पता ही नहीं लगता। सोचकर देखें! क्या हम भजन कर रहे हैं?

हमारे अंदर ये ख्वाहिशें हमारा मन पैदा करता है और हम इन्हें सतगुरु से पूरा करवाना चाहते हैं। हम सतगुरु के कहे मुताबिक नहीं चलते बल्कि सतगुरु से कहते हैं कि आप हमारे कहे मुताबिक चलें। सोचकर देखें ! हमारे अंदर सतगुरु के लिए कितना प्यार है और कितना इश्क है।

h c h

सतसंग–परम सन्त अजायब सिंह जी 29 सितम्बर,1995–16 पी.एस.आश्रम

तपिश

स्वामी जी महाराज की बानी

परम पिता परमात्मा सावन-कृपाल के चरणों में नमस्कार है, जिन्होंने गरीब आत्मा पर रहम किया, 'नाम' की दात बख्शकर तपती हुई आत्मा को ठंडक पहुँचाई। हर युग में काम, क्रोध, लोभ, मोह और अहंकार की **तपिश** है। बड़े-बड़े ऋषि मुनि भी इस तपिश में बह चुके हैं। आप जिस पर दया करें वही इस **तपिश** से बच सकता है। भाग्यशाली जीव 'नाम' के साथ जुड़ जाते हैं, उन्हें ही महाआनन्द, महाखुशी प्राप्त होती है।

सतगुरु 'नाम' का दाता बनकर आता है। 'नाम' में शान्ति है। सतगुरु की चोट तीनों भवनों में प्रकाश करती है। सन्त-महात्मा कोई नई कौम बनाने के लिए नहीं आते और न ही हमारे हाथों में डंडे देकर लड़ना सिखाते हैं। वे प्यार से कहते हैं कि आप अपने-अपने समाजों में रहें और खुशी से अपने-अपने रीति-रिवाज करें।

सन्तों का सेवक की दुनियावी जिंदगी से कोई लेन-देन नहीं होता; उनका सेवक के साथ रूहानियत का ही सम्बन्ध है। सन्त कहते हैं, ''आपका संसार में आने का उद्देश्य परमात्मा से मिलाप है। आप समाज में रहते हुए, अपनी पारिवारिक जिम्मेवारियां निभाते हुए भक्ति करके इस उद्देश्य को पूरा कर सकते हैं।'' गुरु नानकदेव जी कहते हैं:

सतगुरु पूरा भेंटया, पूरी होवे जुगत।
हसेन्दियाँ, खलेन्दिया, पहेन्दियाँ विचे होवे मुक्त॥

अगर हमारी जुबान पर उठते, बैठते, सोते, जागते 'नाम' है तो हम बड़ी आसानी से गृहस्थ की जिम्मेवारियों को निभाते हुए जहाँ से हमारी आत्मा आई है वापिस अपने घर पहुँच सकती है। गुरु नानकदेव जी कहते हैं कि हमारी यह हालत है:

बुरे काम को उठ खलोया, नाम की वेला पै पै सोया।

विषय-विकार भोगने हैं तो नींद उड़ जाती है, आलस नहीं आता। 'नाम' जपना है तो अनेकों बहाने हैं कि बैठा नहीं जाता।

सारा दिन मजदूरी करे, हरि सिमरन वेले बज्र सिर पड़े।

हम सारा दिन बाल-बच्चों और इन्द्रियों की मजदूरी करते हैं। भक्ति करनी हो तो हमारे सिर पर आलस का भारी पत्थर टिक जाता है। संसार में कबीर साहब, गुरु नानकदेव जी, रविदास जी और तुलसी साहब व और सन्तों ने भी यही कहा है, ''आप लोग परमात्मा की तरफ से सोए हुए हैं, संसार की तरफ जाग रहे हैं; आप लोग अंधे हैं।'' हम कहते हैं कि हमारी आँखें हैं हम संसार को देखते हैं लेकिन असली अंधे वे हैं जो परमात्मा के अंदर होते हुए भी उसकी खोज बाहर करते हैं।

महाराज सावन सिंह कहा करते थे, ''हमारी आँखें सूरज, चन्द्रमा, सितारों को बिजली की रोशनी के सहारे ही देख सकती हैं क्योंकि ये आँखें खुद रोशन नहीं।'' अगर हम किसी ऐसे मकान में चले जाएं जहाँ रोशनी न हो तो हमें कुछ भी दिखाई नहीं देता, ये आँखें काम नहीं करती। हम राजस्थान के लोग जानते हैं कि जब आँधी आती है तो दिन में भी कुछ दिखाई नहीं देता। इसलिए सन्त कहते हैं कि आँखें होने के बावजूद भी आप अंधे हैं। गुरु साहब कहते हैं:

अंधे से न आखिए, जिन मुख लोयन नाहे।
अंधे से ही नानका, जे खसमों कुत्थे जाहे॥

हरिजन जाति का एक अंधा प्रेमी महाराज सावन का नामलेवा था। मैंने उसके बारे में सुना था कि उसे अंदर महाराज सावन के दर्शन होते हैं। एक बार मिट्टी ढोने की सेवा लगी, मैं भी उस सेवा में था। वह प्रेमी मिट्टी ढोने की बहुत सेवा किया करता था। बहुत से प्रेमी उसकी छड़ी पकड़कर अपनी टोकरी उठाते और उसकी भी मदद करते थे।

मुझे पता ही नहीं चला कि कब महाराज सावन आकर बैठ गए। उसने मुझसे कहा, ''देख भाई ! महाराज जी की कैसी पगड़ी है, कितने सुंदर लग रहे हैं।'' मैंने उससे कहा, ''क्या तुझे दिखाई देता है?'' उसने कहा, ''हाँ ! उनकी दया से दिखाई देता है।''

बाहर से तो वह अंधा था लेकिन जब उससे चर्चा होती तो पता लगता कि उसका गुरु उसके अंदर प्रगट है। वह बताया करता था, ''मैं पहले भी इनसे मिला था लेकिन अहंकार के कारण मुझे भंगी के घर जन्म मिला है। इतनी सजा पाकर भी यह मन अभी भी रुकावटें पैदा करता है।'' तुलसी साहब कहते हैं:

है घट में सूझत नाहीं, लानत ऐसी जिन्द।
तुलसी या संसार को, भया मोतियाबिन्द॥

महात्मा कहते हैं जैसे किसी की आँखों की रोशनी चली जाती है और वह डाक्टर से आँख बनवाने में मदद लेता है; उसे खोई हुई रोशनी वापिस मिल जाती है। इसी तरह किसी ऐसे के पास जाएं जो अंदर की आँख का सर्जन हो ! वह हमारी अज्ञानता के मोतियाबिंद को दूर कर सकता है। गुरु नानकदेव जी कहते हैं:

ज्ञान अंजन सच नेत्री पाया, चानण होया अज्ञान अंधेर गवाँया।

अगर आँखों की रोशनी कम हो जाती है तो डाक्टर दवाई-अंजन वगैरह इस्तेमाल करने की सलाह देते हैं कि आँखों पर आई मैल दूर हो जाए। जब हम मालिक के प्यारों के पास जाते हैं तो वे हमें सच रूपी सुरमा देते हैं। सच रूपी सुरमा आँखों में डालने से हमारे अंदर 'शब्द' का प्रकाश हो जाता है। सच वह एक परमात्मा है जिसका कभी नाश नहीं होता। किसी ने परमात्मा को नहीं बनाया, वह सुतेसिद्ध ही है। परमात्मा का विधान खुद ही काम कर रहा है। गुरु नानकदेव जी महाराज कहते हैं:

थापेया न जाए कीता न होए, आपे आप निरंजन सोए।

मुझे अपनी जिंदगी में काफी खोज करने का मौका मिला। बाबा बिशनदास जी के चरणों में जाने से पहले मैं कई बार श्रद्धा से हसन अब्दाल और पंजासाहब गया हूँ। अमरनाथ की गुफा के दर्शन भी किए हैं। बहुत सी मस्जिदों में भी गया हूँ। मैं बचपन से ही किसी समाज का कैदी नहीं रहा।

मेरे दिल में नम्रता और सेवाभाव था। मैं जब भी किसी महात्मा के पास गया, उसके पास जो कुछ था उसने मेरे आगे रख दिया। हम एक छोटी सी खूंटी गाड़कर भी किसी को खुश नहीं कर सकते और उससे कहते हैं कि हमें परमात्मा दिखाओ ! किसी को खुश करना बहुत मुश्किल होता है।

जे सजना तैं मुर्शिद खुश करना, ते सिर कत्ल करौना पैंदा है।

जिन्होंने सिमरन किया है उनसे पूछें उन्होंने मन को किस तरह बस में किया। सिमरन के जरिए नौं द्वारे खाली करके फैले ख्यालों को आँखों के पीछे लाना ही सिर कत्ल करवाना है। जब तक थोड़ा सा भी बुरा ख्याल या अभाव है तब तक परमात्मा दरवाजा नहीं खोलता। हम चढ़ाई चढ़ ही नहीं सकते।

जमीन श्रद्धा से बनती है। हम Gemotary सीखते हैं तो हमें कुछ रेखाएं लगानी पड़ती हैं जिनका बाद में कोई मतलब नहीं होता। इसी तरह शुरू-शुरू में हमें बाहरमुखी भरोसा बनाना पड़ता है। जब हम सन्तों के बताए मार्ग पर चलते हैं तो आगे जाकर कोई शक-शकूक नहीं रहता। अंदर का मार्ग किताब की तरह खुल जाता है, बाहर से भी साफ दिखाई देता है।

मुझे महाराज सावन की शरण में बैठने का ज्यादा से ज्यादा मौका मिला है। आपके जमाने में हमने देखा है कि गर्म ख्यालों के लोग आपके दरवाजे के सामने ही धर्मस्थान बनाकर बैठ गए, उन्होंने आपके खिलाफ बहुत कुछ छाप दिया लेकिन महाराज सावन टस से

मस नहीं हुए। आप यह कहते, ''सन्तों की जीत चुप में ही होती है। ओछा आदमी अपनी सफाई पेश करता है; समझदार आदमी समय की इंतजार में रहता है कि समय अपने आप ही बता देगा।''

गुरु कहें जगत सब अंधा। कोइ गहै न घट की संधा॥
बाहर-मुख भरमें सारे। अंतर-मुख शब्द न धारे॥

अगर ऋषियों-मुनियों को यह पता लग जाता कि परमात्मा अंदर है; उनके नेत्र खुले होते तो वे बाहर न भटकते। महाराज सावन सिंह जी कहा करते थे, ''मैंने बाईस साल खोज की। जब बाबा जयमल सिंह जी मिल गए तो मेरी खोज पूरी हो गई।''

जद जीव शरण गुरु की आवे, कर्म धर्म सब भम्र नसावे।
जो मार्ग गुरु दे बताई, सोई कर्म धर्म हुआ भाई॥

हम पहले जो कर्म-धर्म करते हैं उसे ठप्प करके रख दें। गुरु 'सुरत शब्द' का जो रास्ता बताता है उसकी कमाई करें। दो घोड़ों पर चढ़ने वाला कभी भी मंजिल पर नहीं पहुँचता।

हम महाराज कृपाल की हिस्ट्री में पढ़ते हैं कि आप दिन-रात यही पुकार करते थे, ''मेरा कहीं अधूरे गुरु से वास्ता न पड़ जाए ! पूरा गुरु ही मिले।'' जब आपको आपके प्यारे सतगुरु महाराज सावन मिल गए तो आप उन्हीं के हो गए।

मेरे पास मालिक का दिया हुआ सब कुछ था। मैंने पाथियाँ खरीदकर धूनियाँ तपाई, जलधारे किए। जब परमात्मा ने मेरे ऊपर मेहर की मुझे बाबा बिशनदास जी से 'दो शब्द' का भेद मिला; मैंने उसी समय बाहर का रीति-रिवाज छोड़ दिया। प्यारेयो ! ब्रह्म तक का भेद ले लेना ही काफी नहीं प्रेक्टिकल भी करना होता है।

अगर हम किसी लड़की से कहें कि हम तेरी शादी कर देते हैं तू भाई-बहनों और सखी-सहेलियों के ख्याल को अपने दिल से निकाल दे, वह चाहे सारी जिंदगी लगी रहे कामयाब नहीं हो सकती। जब हम

उस लड़की की शादी कर देते हैं तो उसका मन पति के चरणों में लग जाता है और सखी-सहेलियों का ख्याल अपने आप ही दिल से निकल जाता है। इसी तरह हम बाहर के रीति-रिवाजों को तब तक ही महत्व देते हैं, जब तक हमारा ख्याल 'शब्द-नाम' के साथ नहीं जुड़ता।

बुल्लेशाह अच्छा पढ़ा-लिखा इन्सान था। वह जब शाह ईनायत के पास गया, उसने कहा, ''मैं मस्जिद का मौलवी हूँ मुझे मस्जिद में जाना पड़ेगा।'' सन्त ऐसी कोई शर्त नहीं रखते कि आप अपने रीति-रिवाज छोड़ दें तो ही हम आपको रास्ता देंगे। कुछ समय बाद शाह ईनायत ने बुल्लेशाह से पूछा, ''क्या तू मस्जिद में गया और नमाज पढ़ी?'' बुल्लेशाह ने कहाः

नमाज पढ़ा के तैं वल देखा, मैंनू काबा भुल गयो ही।

जब मैं नमाज पढ़ता हूँ, ऊँचा-नीचा होता हूँ तो मेरा ध्यान टूटता है। अब तूं ही मेरा दीन-ईमान है। प्रेमी का ध्यान गुरु की तरफ हो जाता है। उसकी आँखों में गुरु की मन मोहनी सूरत छा जाती है। भीखन शाह कहते हैंः

कहे भीखन दोहे नैन संतोखे, जैं देखां तैं सोई।

मुझसे कई साधु, गुरुद्वारे के ग्रंथी और पादरी भी 'नाम' ले गए हैं। मैंने उनसे ऐसी कोई शर्त नहीं रखी कि आप ग्रंथीपना, पादरीपना छोड़ें या जो कपड़े आपने पहने हैं उन्हें बदलें ! मेरा जाति तजुर्बा है कि जब अंदर जाकर सुरत लग जाती है तो फिर कौन गुड्डी पटोलों* को संभालता है?

सन्तों की बानी किसी एक समाज के लिए नहीं होती। 'शब्द-नाम' की कमाई को छोड़कर परमात्मा को बाहर खोजने वाले सभी हिन्दू, मुसलमान, सिक्ख, इसाई भ्रम में हैं। बाहर पत्थर और पानी है; नीचे धरती और ऊपर आसमान है।

*खिलौने

परमात्मा हमारे अंदर बैठा हमारी रखवाली कर रहा है। जब हम उसे अपने अंदर की लेबोट्ररी में खोज लेते हैं तो पता लगता है कि वह हर जगह मौजूद है; फिर हम किसी को भला बुरा नहीं कहते। गुरु अर्जुनदेव जी महाराज कहते हैंः

अड़सठ तीर्थ सगल पुण्य जीव दया परवान।

आप कहते हैं अड़सठ तीर्थों का पुण्य एक तरफ है और किसी जीव पर दया कर देना एक तरफ है। जो अपने पर दया करता है वही दूसरे जीवों पर भी दया कर सकता है; क्योंकि जान सबको प्यारी होती है। किसी भी महात्मा ने हिंसा का प्रचार नहीं किया।

मन जगत भोग रस बंधा। नित करे कर्म बस धंधा॥

हम बातें ही करते हैं, यह बातों का मजबून नहीं। यह मेहनत का मजबून है। हमारी यह हालत हैः

दिल कमजोर फँसे विच दुनिया, रीस आशिकां करदे।
गल्ली भांलण मजा प्यार दा, ते पैर पिछा नूं धरदे॥

कई लोगों ने यह नज़ारा देखा है कि जब महाराज सावन सिंह जी अपनी कोठी से निकलते तो कभी किसी छोटे से बच्चे के पास खड़े होकर पूछ लेते, ''हाँ भाई ! क्या हाल है?'' किसी बुजुर्ग के पास खड़े होकर पूछ लेते, ''सुना भाई ! सतसंग में क्यों नहीं आया?'' भजन करने वाले जानते हैं कि सतगुरु तीसरे तिल पर सेवक की मदद के लिए हमेशा तैयार रहता है।

गुरु नानकदेव जी कहते हैं, ''काम, क्रोध, लोभ, मोह, अहंकार की स्थूल गाँठ हमारी आँखों के पीछे सूक्ष्म त्रिकुटी-ब्रह्म में है। जब हम ब्रह्म से आगे निकल जाते हैं वहाँ इनका नामोंनिशान नहीं रहता। अगर हम यहाँ स्थूल भोगों से बच जाएंगे तो अंदर सूक्ष्म भोग घेर लेंगे।'' *सिमरन* करना एक तरह की दवाई खाना है। हम दवाई भी खाते हैं और हाय ! हाय ! भी करते हैं।

फँस मरे काल के फंदा। अब हुआ जीव अति गंदा॥

जब हम सतगुरु से 'नाम' लेने के लिए सोचते हैं तभी मन अपने हथियार लेकर हमारे पीछे लग जाता है। इस मन के बहुत फंदे हैं। अभ्यासी जानते हैं कि कहीं मैं-मेरी, कहीं काम-क्रोध तो कहीं चुगली और ईर्ष्या का फंदा है।

गुरु कहैं नित्त समझाई। कर खोज शब्द घट जाई॥

सन्त-सतगुरु हमें सतसंग के जरिए समझाते हैं कि प्यारेयो ! आप कमाई करें, मेहनत करें और अंदर जाएं। जब हम अंदर जाते हैं तो आँखों से देखते हैं कि सतगुरु किस तरह हमारी मदद करता है। *काल* ने अंदर ऐसी भूल-भुलैय्या बनाई हुई है कि अगर सतगुरु हमारे साथ न हो तो हम अंदर जा ही नहीं सकते। गुरु ही हमें अंदर ले जा सकता है। गुरु नानक साहब कहते हैं:

भूले सिक्ख गुरु समझाए, ओजड़ जांदे मार्ग पाए।

हम बाहर के रीति-रिवाजों और कर्मकांडों में ही भूले हुए हैं; हमें अपने पूर्वजों वाले कर्मकांड छोड़ते हुए दर्द होता है। सन्त हमें बाहर सतसंग सुनाते हैं और 'नाम' देते हैं। जब हम नौं द्वारे खाली करके अंदर धुन को पकड़ते हैं तब सन्त हमें 'सार-शब्द' के साथ जोड़ते हैं और अंदर सतसंग भी देते हैं। अंदर *काल* ने भी दयाल से मिलते-जुलते 'शब्द' रखे हुए हैं।

अंदर सुरत शब्द धुन जागे, सतगुरु झगड़ निबेड़े।

जब अंदर धुन प्रगट हो जाती है, सतगुरु समझाता है कि किस 'शब्द' को छोड़ना है और किस 'शब्द' को पकड़ना है? महाराज जी कहते थे, ''नाम कोई मामूली चीज़ नहीं, संभाल है; तवज्जो है।''

मैं बताया करता हूँ कि सतगुरु का जो स्वरूप अंदर काम करता है उसका ज्ञान बाहर वाले को है; जो स्वरूप बाहर काम करता है

उसका ज्ञान अंदर वाले को है। गुरु हमें हर रोज बाहर से भी और अंदर से भी समझाता है कि तू अंदर जाकर खोज कर।

यह सुने ने गुरु के बैना। कस खुलैं हिये के नैना॥

मैंने देखा है कि बहुत से जीवों को पहले दिन तो बहुत अच्छा तजुर्बा होता है। वे लोग घर जाकर अभ्यास में नहीं बैठते, फिर आकर कहते हैं, ''महाराज जी ! पहले तो ठीक था लेकिन अब बैठा नहीं जाता।'' तब मैं कहता हूँ, ''क्या तेरी जगह कोई और बैठेगा? क्या तू अपनी रोटी किसी और को दे देता है? हम यह तो नहीं कहते कि अच्छा खाना हमसे नहीं खाया जाता, अच्छे बिस्तर पर नहीं सोया जाता लेकिन अभ्यास के लिए हम कह देते हैं कि हमसे बैठा नहीं जाता।''

सावन सिंह जी कहा करते थे, ''आपका काम आपको ही करना पड़ेगा। इस जन्म में नहीं करेंगे तो अगले जन्म में करना पड़ेगा। इसे जहाँ से छोड़ेंगे वहाँ से शुरू करना पड़ेगा।'' गुरु कहता है कि भजन करो, हम लाखों बहाने करते हैं तो अंदर की आँख कैसे खुलेगी?

बिरला कोइ जिव अधिकारी। गुरु बचन करे आधारी॥

कहीं दिल में ख्याल हो कि सभी ऐसे होते हैं ! जंगल में शेर भी होते हैं, संगत में बहादुर भी होते हैं। मैं मुम्बई, अहमदाबाद, बैंगलोर और हैदराबाद में आठ दिन का प्रोग्राम देता हूँ; वहाँ बहुत से हिन्दुस्तानी और पश्चिमी प्रेमी जब अपना तजुर्बा बताते हैं उनकी तरक्की देखकर दिल खुश हो जाता है।

प्रोग्राम के दौरान हम अपने घरों के कारोबार भूले हुए होते हैं। हमें वहाँ सिमरन करने का, अपने ख्याल को टिकाने का मौका मिलता है। विरले ही गुरु के अमोलक वचनों को समझते हैं।

जो बचन सम्हारे गुरु के। मन फंद लगावे छल के॥

जो गुरु के वचनों पर ऐतबार करके उन वचनों पर चलता है; मन अपने सारे हथियार लेकर उसके पीछे लग जाता है। प्यारेयो ! गुरु के वचनों को मानना और गुरु पर भरोसा करना बहुत मुश्किल है।

मुझे वह समय अच्छी तरह याद है जब परमात्मा कृपाल ने मेरी आँखों पर हाथ रखकर मुझे बिठाया। मैंने रोकर कहा, ''*काल* बड़ा जबरदस्त है, यह किसी का पर्दा नहीं रहने देता। तूने ही मेरा ख्याल रखना है।'' महाराज जी ने मुझे गले लगाकर कहा, ''तू बेफिक्र रह ! मैं खुद तेरा ख्याल रखूँगा।''

जब मैं तीन दिन तक बाहर नहीं निकला, मेरे पास जो सेवक रहता था वह बहुत उदास हुआ। महाराज कृपाल ने तीसरे दिन खुद यहाँ पहुँचकर मुझे अंदर से निकाला था। अब तो यह जगह काफी ठीक है लेकिन जब आप मुझे बिठाकर गए थे उन दिनों यह जगह ऊँची-नीची थी। सेवक ने कहा कि महाराज जी ! आपकी सेहत ठीक नहीं है आप नीचे न जाएं। महाराज जी ने कहा, ''जहाँ अजायब जा सकता है क्या मैं वहाँ नहीं जा सकता?'' आपने अंदर जाते हुए यह कहाः

चलो सईयों रण देखन चलिए, जित्थे आशिक सूली चढ़दे।
चढ़दे चढ़दे करण कलोंला, मौतों मूल न डरदे॥

जो बिठाकर गया था वह सब जानता है। गुरु बेइन्साफ नहीं। महाराज सावन सिंह जी कहा करते थे, ''जिसके दरवाजे पर बैल बंधा हुआ है, उसे फिक्र है कि कब इसे धूप से छाया में करना है; कब इसे पानी पिलाना है।''

मैंने तो अपना जीवन जमीन के नीचे बैठकर ही बिताया है। मैं सिर्फ आठ बजे से नौ बजे तक एक घंटा ही बाहर निकलता था। दुनिया में मेरी ज्यादा जान पहचान नहीं थी। मेरे गुरु ने मुझे दिल्ली, अमेरिका, केनेडा, कोलम्बिया जहाँ भी भेजा मैंने पहले टूर पर सब प्रेमियों से यही पूछा, ''क्या कोई पहले से मुझे जानता है?''

वह कौन सी ताकत थी कि सात समुद्र पार से प्रेमी खिंचे चले आए। चार्ल्स फेलमिन यहाँ छोटी सी दीवार पर बैठा हुआ था। किसी ने उससे पूछा, ''आप लोग यहाँ क्यों आते हैं?'' उसने उसी दीवार की मिट्टी मुँह में डालकर कहा, ''यहाँ की मिट्टी बहुत प्यारी है।''

गुरु को समझें। कई बार मन इतना सख्त हो जाता है कि गुरु की बात पर ऐतबार ही नहीं करता। मैंने दयालु परमात्मा की दोनों ताकतों को अपनी आँखों से देखा है कि वे क्या थे, हमें क्या देने के लिए आए थे? हमें मान है कि हमारे गुरु कुलमालिक थे। पूरा गुरु पक्की सरसों होता है। कच्ची सरसों में से न तेल निकलता है न खल निकलती है। बातों से कुछ नहीं बनता, यह कमाई करने का मत है।

बहुत से लोगों ने कहा कि अंग्रेजों से परमात्मा भी डरता है क्योंकि ये तो इन्सान को भी बेच देते हैं। मैंने रसल पर्किन्स से पूछा कि क्या आप लोग इन्सानों को भी बेच देते हैं? उसने कहा, ''हाँ जी ! आपको जरूर बेच देंगे इसमें कोई शक नहीं।'' यह तो बिकने के बराबर ही है कि आज वहाँ के हजारों लोग इधर मुँह करके सोते हैं क्योंकि उन्होंने खरीद जो लिया है।

इसमें कोई शक नहीं कि गुरु सेवक के पास बिक जाता है। अगर सेवक बिकता है तो गुरु भी बिक जाता है। भाग्यशाली लोग ही गुरु के हुक्म को मानते हैं।

ज्यों त्यों कर जीव भुलावे। काल अपने खेल खिलावे॥

मैंने संसार में जाकर यही होका दिया कि गुरु मरता नहीं। जो लोग यह कहते हैं कि गुरु मर गया है उन्हें अदालत में खड़ा करके उनसे पूछा जाए कि उन्होंने मरने वाला गुरु क्यों धारण किया? कबीर साहब कहते हैं:

गुरु करया है देह का, सतगुरु चीन्हा नाहे।
लख चौरासी धार में, फिर फिर गोते खाहे॥

जब दयालु परमात्मा कृपाल संसार से थोड़ा सा दूर हुए तो ''एक बनो नेक बनो'' के नारे लगाने वालों को *काल* ने गुमराह कर दिया। अगर वे गुरु को हाजिर नाजिर समझते तो क्या आपस में झगड़ते? महाराज कृपाल कहा करते थे, ''एक बल्ब फ्यूज हो जाए तो उसकी जगह दूसरा बल्ब लग जाता है।''

जो लोग देह को ही गुरु मानते हैं वे भूले हुए हैं। देह न सेवक की रहती है न गुरु की रहती है। सतगुरु के 'शब्द' को पकड़ो। 'शब्द-नाम' जन्म-मरण से ऊपर है। गुरु नानकदेव जी कहते हैं:

सतगुरु मेरा सदा सदा, न आवे न जाए।
वो अविनाशी पुरुष है, हर जह रहा समाए॥

परमात्मा हर जगह है। *काल* खेल दिखाता है। गुरु की जायदाद के लिए वही लोग झगड़ा करते हैं जिनके पास अपनी रोजी रोटी नहीं होती। जिन्हें परमात्मा ने सब कुछ दिया हो वे झगड़ा क्यों करेंगे? हमारे गुरुदेव महाराज कृपाल का उनके गुरु के डेरे में अपना मकान था। आप अपने गुरुदेव के चोला छोड़ने के बाद डेरे को नमस्कार करके आ गए।

यहाँ बहुत से प्रेमी बैठे हैं, मैं जिनके पास छह महीने छिपकर रहा हूँ ताकि लोग मुझे पार्टियों में न खींचे। उन लोगों ने अभी तक मुझे माफ नहीं किया है। अभी भी पत्र लिखते हैं कि आप हमारी पार्टी में आ जाएं। पार्टी तो गुरु की है। जो गुरु की पार्टी में आ गया उसे किसी पार्टी की क्या जरूरत है?

मैं बताया करता हूँ कि मेरे पास अपनी रोजी रोटी के लिए है। मेरी पैदाइश ही वहाँ हुई जहाँ जायदाद की कोई कमी नहीं थी। किसी की जायदाद के पीछे तब भागें जब परमात्मा ने अपने घर में कुछ न दिया हो। सन्त कहते हैं, ''अगर आपको रोटी का ही फिक्र है तो आप भक्ति कैसे करेंगे?''

गुरु भक्ति न करने पावे। बहु भाँति उपाधि लगावे।

काल पहले तो सतसंगी को गुरु भक्ति से दूर करता है, फिर उसे बता भी देता है कि यह तेरी गलती है। तेरा गुरु तो ठीक है तुझमें ही कमी है।

कभी मित्र होय भरमावे। कभी वैरी बन धमकावे॥

काल कभी मित्र बनकर कहता है कि विषय-विकार भोगने में, शराब पीने में क्या बुराई है? कभी अंदर ही मित्र बनकर वकील की तरह डराना शुरू कर देता है कि अगर तू गुरु भक्ति करने लग गया तो तेरे देवते, तेरा समाज, तेरे घरवाले तुझसे नाराज हो जाएंगे।

जब हम भक्ति करने लगते हैं तो सबसे पहले हमारा वास्ता परिवार के लोगों से पड़ता है। माता-पिता कहते हैं, ''हमारा बच्चा त्यागी हो गया है। भक्ति तो बूढ़े लोग करते हैं।'' यार-दोस्त कहते हैं, ''तू किस तरफ लग गया है, यही दिन तो खाने-पीने के हैं।'' अगर कोई बूढ़ा भक्ति करने लग जाए तो उसके बूढ़े साथी कहते हैं कि तेरे बिना तो महफिल ही सूनी हो गई है।

कभी रोगन माहिं झुमावे। नाना बिधि जाल बिछावे॥

मन के जाल अनगिनत हैं। सन्तों ने इस मन को कहीं धोखेबाज, कहीं चुगलखोर, कहीं हरामजादा, कहीं कुत्ता तो कहीं लक्कड़मंडी का संडा कहकर बयान किया है।

शरीर को कोई न कोई रोग तो लगा ही रहता है अगर दुनिया के कारोबार करने हों तो हम गोली खा लेते हैं। भजन करना हो तो हम बहाने बनाते हैं कि मेरे सिर में दर्द है। घर का कोई कारोबार करना हो तो हम सिर पर पट्टी बाँध लेते हैं।

शब्दा रस लेन न पावे। यों जीव सदा दुख पावे॥

हम नौं द्वारे खाली करके 'शब्द' का रस प्राप्त नहीं करते, अंदर नहीं जाते इसलिए दुःखी हैं, तड़पते हैं। कभी काम घेर लेता है तो कभी लोभ-मोह घेर लेते हैं। महाराज जी कहा करते थे कि ये मुसीबतें उन्हीं को आती हैं जो भजन के चोर हैं।

जो जो चोर भजन के प्राणी, से से दुःख सहे।
आलस नींद सतावे उनको, नित नित भ्रम गहे।
काम क्रोध के धक्के खावें, लोभ नदी में डूब मरे॥

गुरु मेहर करें जिस जन पर। सो बचे शब्द धुन सुन कर॥

सतगुरु सदा ही मेहर करता है। सेवक के अंदर 'शब्द' की धारा हर समय चलती रहती है। सेवक उस जगह पहुँचे जहाँ से दया-मेहर आ रही है।

तब गहे शब्द रस जाँची। फिर जले न जग की आँची॥

जब लोहा चुम्बक के दायरे में आता है तो चुम्बक उसे अपने साथ मिला लेता है। इसी तरह जब हम नौं द्वारे खाली करके 'शब्द' की रेंज में आते हैं; 'शब्द' हमें खींच लेता है, फिर इन्सान पर इन्सानी कमजोरियों का कोई असर नहीं रहता।

सब बात लगी अब काँची। गुरु भक्ति मिली अब साँची॥

हमें जो विषय-विकार अच्छे लगते थे, वे फीके लगने लग जाते हैं। जब सच्ची भक्ति प्राप्त हो जाती है तो पता लगता है कि जो रस अंदर है वह बाहर के रसों से करोड़ों दर्जे अच्छा है। बाहर के विषय-विकारों में **तपिश** है ये हमें बीमारियों में फँसा देते हैं।

जिस तरह लोहे को घुन नहीं लगता और सोने को जंग नहीं लगता उसी तरह गुरु का भक्त कभी नर्क में नहीं जाता। वह जीते जी अपने ख्याल को पारब्रह्म में ले जाता है। गुरु नानक साहब कहते हैं:

गुरु दा भक्त जिऊंदा मरया।

काम, क्रोध, लोभ, मोह, अहंकार की गाँठ आँखों के पीछे सूक्ष्म त्रिकुटी में है। जब तक हम *सतोगुण रजोगुण तमोगुण* से ऊपर नहीं जाते इनसे बच नहीं सकते, गुरु भक्त नहीं कहलवा सकते।

राधास्वामी की लीन्ही सरनी। सो जीव लगे भौ तरनी॥

आखिर में आप कहते हैं, ''यहाँ औरत, मर्द, हिन्दू, मुसलमान, सिक्ख, ईसाई, हिन्दुस्तानी या अमेरिकन का सवाल नहीं। खुशकिस्मत जीव अपने ख्याल को नौं द्वारों में से निकालकर आँखों के पीछे लाकर पारब्रह्म में चला जाता है। वह खुद तर जाता है, अपनी कुलों को तार देता है और जो भी उसके सम्पर्क में आते हैं उन्हें भी तार देता है।''

गुरुमुख कोटि उद्धारदे दे नामें एक कणीं।

गुरुमुख जिन्हें अपने कमाए हुए 'नाम' में से एक कणी भी बख्श देता है; वे *काल* के फंदे से, जन्म-मरण से बच जाते हैं। स्वामी जी महाराज कहते हैं:

दुःख की घड़ी गनीमत जानो,
सुख में रहत सदा मन गाफिल॥

दुःख में मन का झुकाव परमात्मा की तरफ होता है। हमें ऐसे मौके से फायदा उठाना चाहिए। आपके अंदर आपका मन बहाने बनाता है। जो मन आज भजन में नहीं बैठने देता कल भी यह आपके पास ही होगा। हमें चाहिए स्वामी जी महाराज के कहे मुताबिक आलसी न बनें, तंदुरुस्ती का फायदा उठाएं।

h c h

परम सन्त अजायब सिंह जी के मुखार बिन्दु से

परमात्मा एक रोशनी है

एक यादगार दास्तान

मैं बहुत दिशाओं में बहुत से लोगों के पास गया। मैंने बहुत कर्मकांड किए लेकिन मेरे मन को सन्तुष्टि नहीं मिली। हर जगह लोग सिर्फ भगवान की बातें करते और थ्योरी ही समझाते थे; जिससे मेरी प्यास और बढ़ गई लेकिन कोई मुझे तजुर्बा नहीं करवा सका।

अगर मुझे कहीं से कुछ मिल जाता तो मैं बाबा बिशनदास जी के पास नहीं पहुँच पाता। जब मैंने बाबा बिशनदास जी के चरणों में शीश झुकाया तो मुझे शान्ति मिली। आपने मेरी जिंदगी बनाई और मेरे रास्ते की शुरुआत की।

मैं जब पहली बार बाबा बिशनदास जी के पास गया, मैंने उनसे कहा, ''मुझे भगवान दिखाओ?'' उन्होंने मेरा सिर सूरज की तरफ कर दिया और मुझसे कहा, ''सूरज की तरफ लगातार देखते जाओ और मुझे बताओ कि कितनी देर लगातार सूरज की तरफ देख सकते हो?'' मैं एक पल भी सूरज की तरफ नहीं देख सका और मैंने शर्मिन्दा होकर आपसे कहा, ''मैं ज्यादा देर तक सूरज की तरफ नहीं देख सकता क्योंकि इसकी रोशनी बहुत तेज है।''

बाबा बिशनदास ने कहा, ''**परमात्मा एक रोशनी है**। परमात्मा की रोशनी इस सूरज से हजारों गुना ज्यादा है। हम तो एक सूरज की रोशनी को भी ज्यादा देर तक नहीं देख सकते तो उस परमात्मा की रोशनी को कैसे देख सकेंगे? जब तक हम परमात्मा की रोशनी को देखने वाली आँख नहीं बनाते तब तक हम गुरु को परमात्मा दिखाने के लिए किस तरह कह सकते हैं?''

बाबा बिशनदास ने मुझे बताया, ''हमारी आत्मा का बाहर के रीति-रिवाजों से कोई सम्बंध नहीं होता। पानी के नीचे बैठने से मुक्ति मिलती होती तो पानी में रहने वाले मेंढक, मछलियों को मुक्ति मिल जाती। आग में बैठने से भी मुक्ति नहीं मिलती क्योंकि काम, क्रोध, लोभ, मोह, अहंकार की आग तो हमारे अंदर ही है।''

मैं जब पहली बार बाबा बिशनदास जी के पास पहुँचा उस समय मेरे साथ दो और प्रेमी थे। बाबा जी ने हमें खेती का काम करने के लिए कहा। मेरे साथ के दो प्रेमी किसान थे लेकिन मैंने इससे पहले कभी खेती का काम नहीं किया था। बाबा बिशनदास जी ने मुझसे जो कहा मैंने वही किया। मेरे साथ वाले प्रेमियों ने सोचा कि खेती का काम तो हमने बहुत बार किया है अब यह करने का क्या फायदा? उन्होंने गुरु की आज्ञा का पालन नहीं किया।

शाम को बाबा बिशनदास यह देखने के लिए आए कि उन्होंने जो काम हमें दिया था वह हमने ठीक से किया है या नहीं? मैंने बाबा बिशनदास जी से विनती करते हुए कहा, ''मैंने घर पर खेती-बाड़ी का काम नहीं किया। आपके चरणों में आकर आपकी दया से मैं यह काम कर सका हूँ अगर इसमें कोई गलती हो तो मुझे माफ कर दें।''

उन दोनों प्रेमियों ने बाबा बिशनदास से कोई और काम माँगा कि वे खेती-बाड़ी का काम तो जन्म से कर ही रहे हैं; उनकी इस काम में कोई रुचि नहीं। बाबा बिशनदास उनसे खुश नहीं हुए और उन पर दया नहीं की। उन्होंने सिर्फ इस गरीब आत्मा पर ही दया की।

बाबा बिशनदास जी बहुत ही सख्त महात्मा थे। आपका जन्म रियासत नाभा (पंजाब) के एक राजसी खानदान में हुआ था। आपके घर में हर तरह की सहूलियतें थी। मैंने आपके महल और जायदाद भी देखी हैं। उन दिनों में भारत पर राजा राज्य करते थे। नाभा का राजा हीरासिंह आपको अपना उत्तराधिकारी बनाना चाहता था।

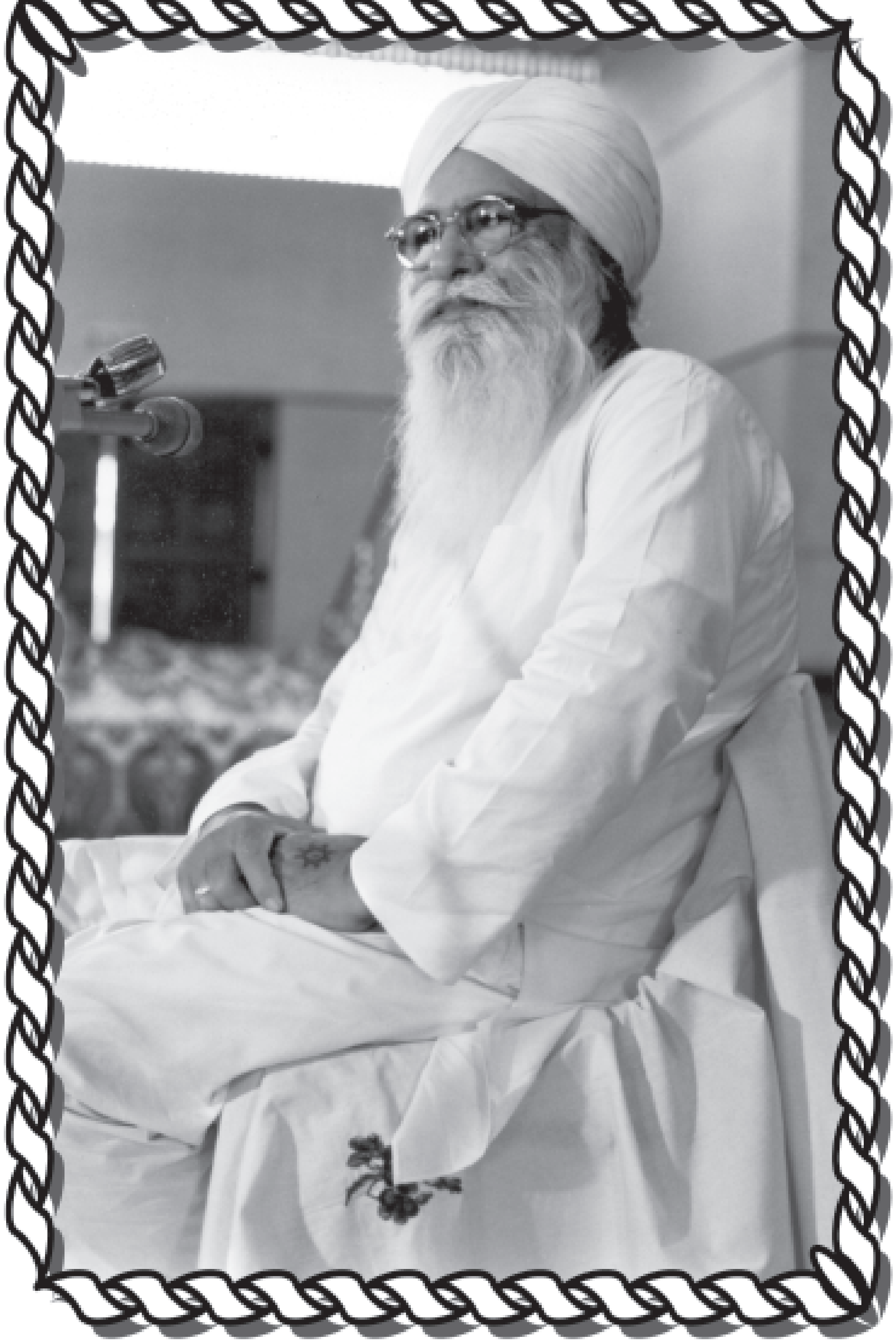

बाबा बिशनदास जी सांसारिक तौर पर बहुत पढ़े-लिखे थे। उस समय भारत में पढ़ाई करना बहुत मुश्किल था। आपको पढ़ने के लिए इंग्लैंड भेजा गया। आपने इंग्लैंड से पी.एच.डी. की डिग्री प्राप्त की। उस समय भारत में पी.एच.डी. की डिग्री प्राप्त करना बहुत बड़ी चीज़ थी। जो इंग्लैंड से पी.एच.डी. की डिग्री प्राप्त करके आता लोग उसकी बहुत इज्ज़त करते थे, सरकार उसे कमीशनर का पद देती थी। बाबा बिशनदास जी कहा करते थे, ''पढ़े-लिखे अपने साथ कुछ नहीं लेकर जाते। रूहानियत के रास्ते में अनपढ़ और पढ़े-लिखे में कोई फर्क नहीं।''

बाबा बिशनदास जी बहुत आरामदायक जीवन व्यतीत कर सकते थे लेकिन आपने मुश्किल जीवन को चुना। आपने अपने जीवन में परमात्मा की खोज के लिए हर तरह के कर्मकांड किए। जब आप बाबा अमोलकदास के पास पहुँचे तो आपने उनसे कोई प्रश्न नहीं पूछा। आपने बाबा अमोलकदास के सामने हाथ जोड़कर कहा, ''गुरु जी ! कृप्या मुझे इस नर्क से निकालकर मुक्त कर दें।'' बाबा अमोलकदास अनपढ़ थे यहाँ तक कि वह अपने दस्तखत करना भी नहीं जानते थे।

जब बाबा बिशनदास जी अमोलकदास जी के पास पहुँचे तब बाबा अमोलकदास ने आपको बियाबान से कँटीली झाड़ियाँ लाकर ऐसी जगह बाड़ लगाने के लिए कहा जो जगह उनकी अपनी नहीं थी। उस जगह कुछ बोया भी नहीं जा सकता था कि उसे सुरक्षा की कोई जरूरत हो। बाबा बिशनदास डेढ़ महीने तक अमोलकदास जी के हुक्म के मुताबिक कंटीली झाड़ियों की बाड़ लगाते रहे। ऐसा करने के बाद ही बाबा अमोलकदास ने बिशनदास जी को पहले 'दो-शब्द' का भेद दिया और भजन करना सिखाया।

बाबा अमोलकदास ने गुरु नानकदेव जी के बेटे श्रीचन्द से 'दो-शब्द' का भेद प्राप्त किया था। गुरु नानकदेव जी खुद भगवान थे। वह इस संसार में लोगों को ज्ञान देने के लिए आए थे। संसार में बहुत

लोगों ने आपसे फायदा भी उठाया लेकिन आपके दोनों बेटे श्रीचन्द और लक्ष्मीदास ने आपसे 'पाँच-शब्द' का भेद नहीं लिया। लक्ष्मीदास मीट खाता और हर तरह का बुरा काम करता था।

श्रीचन्द ने उदासी मत के अविनाशी मुनि से 'दो-शब्द' का भेद प्राप्त किया। अविनाशी मुनि ने श्रीचन्द को शरीर पर लंगोट पहनकर नदी किनारे बैठकर तप करने का आदेश दिया। श्रीचन्द ने हर तरह के कर्मकांड किए। श्रीचन्द की गद्दी भारत की एक मशहूर गद्दी हुई है। श्रीचन्द 'दो-शब्द' का भेद देने लगा। उदासी मत के लोग श्रीचन्द को शंकर का अवतार मानते हैं।

गुरु नानकदेव जी ने भाई लैहणां को 'नामदान' दिया। भजन-सिमरन में कामयाब होने पर गुरु नानकदेव जी ने भाई लैहणां को अपना उत्तराधिकारी बना दिया। पूर्ण गुरु जानता है कि क्या होने वाला है? गुरु नानकदेव जी जानते थे कि उनके चोला छोड़ने के बाद उनके बेटे (श्रीचन्द और लक्ष्मीदास) भाई लैहणां को सम्मान नहीं देंगे; क्योंकि परिवार और आस-पास के लोग भाई लैहणां को गुरु नानकदेव जी के घर का नौकर ही समझते थे।

गुरु नानकदेव जी ने चोला छोड़ने से कुछ महीने पहले ही भाई लैहणां को अपने से दूर जाने के लिए कह दिया ताकि आपके बेटे भाई लेहणां को तंग न करें। भाई लैहणां ने अपने गाँव जाकर अपने आपको एक कमरे में बंद करके भजन करना शुरू कर दिया और अपने आपको अंदर से गुरु नानकदेव जी के साथ जोड़ लिया।

जब गुरु नानक जी ने अपनी सांसारिक यात्रा पूर्ण कर ली, अपना शरीर छोड़ दिया तब भी आपके बेटे आपके पास नहीं आए और आपकी अर्थी को कंधा नहीं दिया। आपके बेटे आपसे इसलिए नाराज थे कि आपने उन्हें गद्दी नहीं दी थी। श्रीचन्द और लक्ष्मीदास कहते कि भाई लैहणां हमारे घर का नौकर है हम इसे अपना गुरु कैसे मान लें?

भाई लैहणां गुरु नानकदेव जी के उत्तराधिकारी बन गए लेकिन गुरु नानकदेव जी के बेटों ने उन्हें सच्चे गुरु के रूप में स्वीकार नहीं किया। श्रीचन्द ने गुरु नानकदेव जी के पंथ के समान्तर ही पंथ शुरू कर दिया और 'दो-शब्द' का भेद देने लगा।

युगों-युगों से ही चला आ रहा है कि कुछ लोग पूर्ण गुरु के उत्तराधिकारी को मानते हैं और कुछ नहीं मानते। जिनके भाग्य में लिखा होता है वे ही पूर्ण गुरु के उत्तराधिकारी के पास पहुँचते हैं।

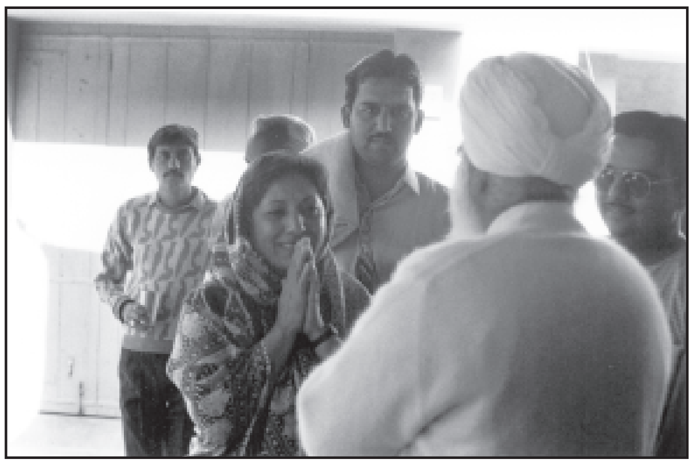

श्रीचन्द ने लम्बा जीवन बिताया। जब वह गुरु रामदास जी से मिला तो उसने उनसे कहा, ''आपने इतनी लम्बी दाढ़ी क्यों बढ़ाई है?'' गुरु रामदास जी ने कहा, ''यह दाढ़ी आप जैसी महापुरुषों के चरण साफ करने के लिए बढ़ाई है।'' गुरु रामदास जी का नम्रता भरा जवाब सुनकर श्रीचन्द रो पड़ा और कहने लगा, ''आपकी इसी नम्रता के कारण हमें गद्दी नहीं मिली, हमारे पास कुछ नहीं बचा।''

बाबा अमोलकदास बहुत अच्छे साधु थे। आपने करीब एक सौ चालीस साल का जीवन बिताया। बाबा अमोलकदास ने बिशनदास और पटियाला के राजा भूपेन्द्र सिंह को ही 'नामदान' दिया। मैं जब बिशनदास जी के चरणों में पहुँचा उस समय अमोलकदास जी चोले में थे।

h c h

पेज नं. 32 के लिए

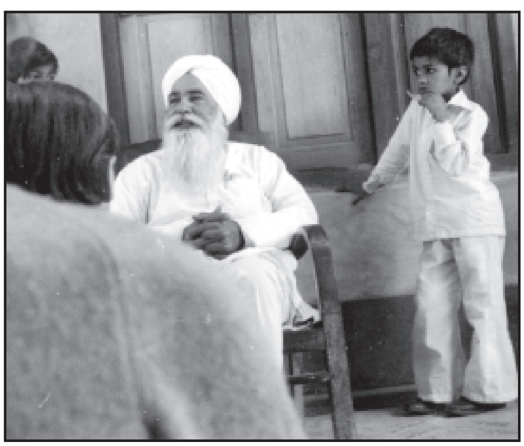

पेज नं. 26 के लिए

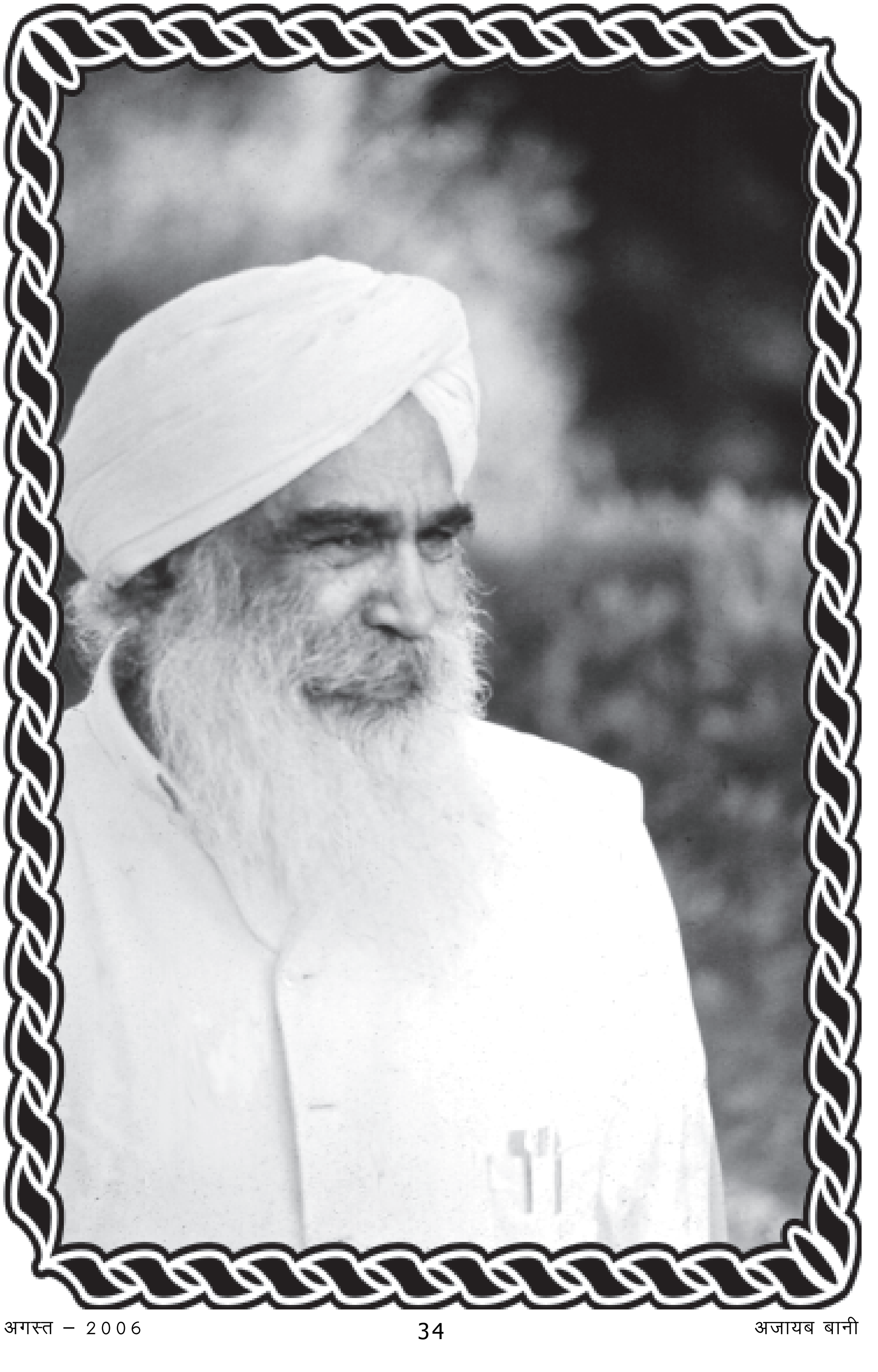

पेज नं. 2 के लिए

पेज नं. 17 के लिए

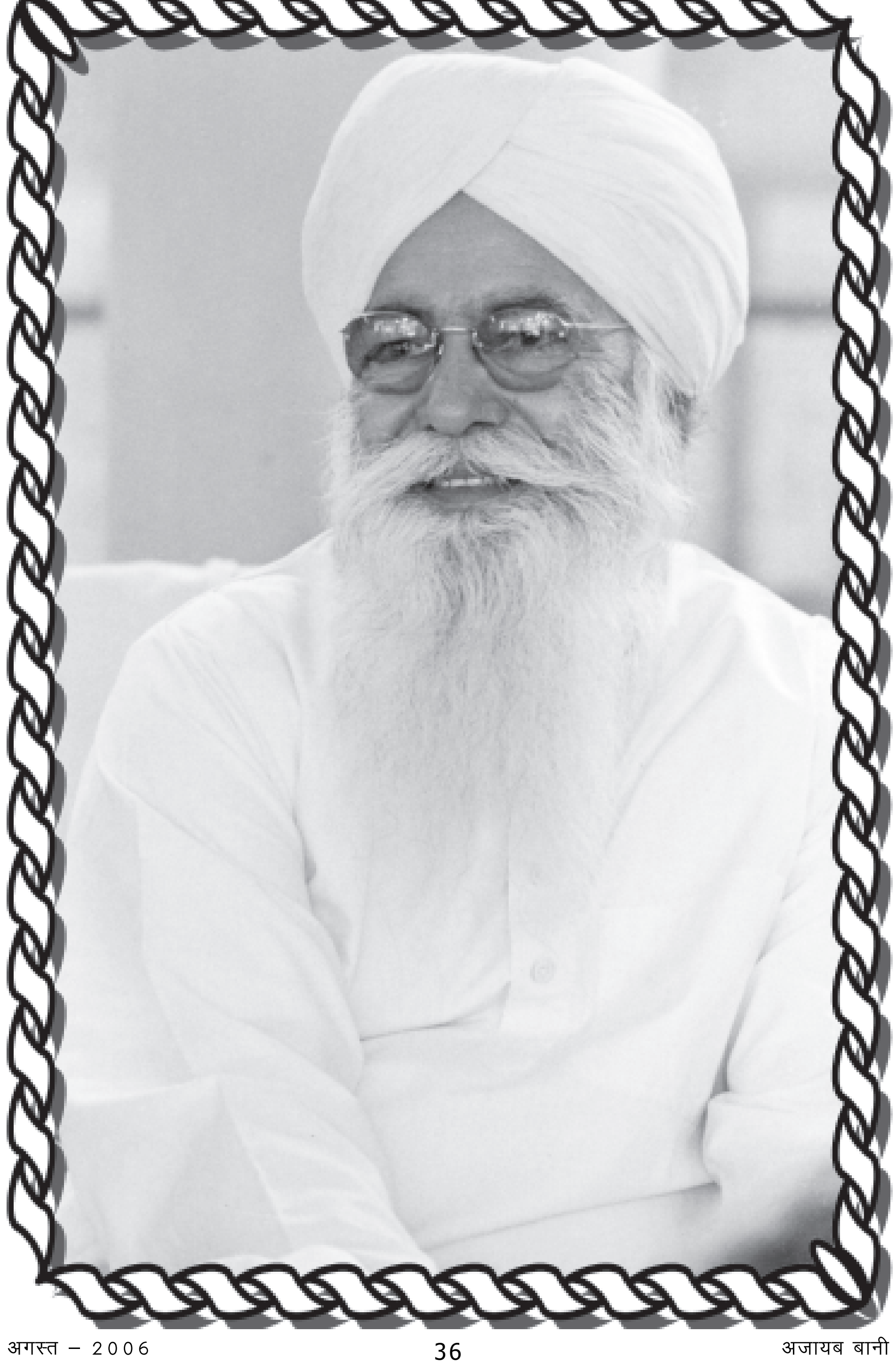

पेज नं. 29 के लिए